चतुर्थ अध्याय

विष्णु प्रभाकर के एकांकियों में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय

विषय प्रवेश -

4.1 समाज और राजनीति का पारस्पारिक संबंध -

साहित्य, समाज और राजनीति का अटूट संबंध है । प्रेमचंद के शब्दों में यह चीजें माला जैसी ही है । जिस भाषा का साहित्य अच्छा होगा उसका समाज भी अच्छा होगा । समाज के अच्छा होने पर मजबूरन राजनीति भी अच्छी होगी । ये तीनों साथ-साथ चलनेवाली चीजें हैं इन तीनों का उद्देश्य एक है । साहित्य इन तीनों की उत्पत्ति के लिए एक बीज का काम करता है । "समाज में जो हानि लाभ तथा सुख-दुःख होता है यह आदमियों पर ही होता है । राजनीति में जो सुख-दुःख होता है वह आदमियों पर ही होता है न । राजनीति में जो सुख-दुःख होता है, वह आदमियों पर ही पड़ता है । साहित्य से समाज का विकास मिलता है । साहित्य से आदमी की भावनाएँ अच्छी और बुरी बनती है । इन्हीं भावनाओं को लेकर आदमी जीता है, और इन तीनो चीजों की उत्पत्ति का कारण आदमी ही है । "[1]

साहित्य समाज को जिस सुचारू और सुव्यवस्थित ढंग से प्रभावित कर इच्छानुसार मोड़ सकता है, उतना कोई अन्य साधन नहीं । संभवतः इसलिए लेनिन ने कहा कि "एक अच्छा साहित्यिक किसी राजनीतिक कर्मठ से कम नहीं होता । गोर्की को लिखने के लिए स्वतंत्रता देनी चाहिए और लेनिन ने ही गोर्की से कहा था कि तुम अन्य राष्ट्रीय क्षेत्र में कम्यूनिजम के प्रचार के लिए जो कार्य कर रहे हो, वह बहुत गहरा और निश्चय ही मानवता का कल्याण करने वाला है ।"[2]

यही कारण है कि मानव कल्याण के प्रश्न को हल करते समय साहित्य और राजनीति को पृथक् नहीं किया जा सकता । मनुष्य को जहाँ सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी जाती है, वही अरस्तू ने उसे राजनीतिक प्राणी भी बताया है । राजनीति को साहित्य से पृथक् करना जीवन को एकांगी बना देना है । रोमा रोला ने एक जगह

लिखा है - ''जो कोई मानव-समाज के भविष्य के लिए युद्ध करना चाहता है उसे राजनीतिक क्षेत्र में युद्ध करना चाहिए क्योंकि मानसिक स्वाधीनता ही उसे युद्ध-क्षेत्र पर हावी बनाए रखेगी ।''[3]

व्यक्ति से परिवार बनता है, जो समाज का व्यष्टि रूप है, और इसलिए उसका अंग भी । संभवतः इसलिए आचार्य नरेंद्र देव ने कहा है - ''सच्चे साहित्यकार का कर्तव्य हो जाता है कि वह मनुष्य को समाज से पृथक् करके, अमूर्त मानवता के स्वतंत्र प्रतीक के रूप में सीमित न कर उसे सामाजिक प्राणी के रूप में देखे ऐसे समाज के सदस्य के रूप में जिसमें निरंतर संघर्ष हो रहा है और इन संघर्षो के कारण जो प्रतिक्षण परिवर्तनशील है ।''[4] जब हम मानव जीवन का विश्लेषण करते है । तब दो तथ्य स्पष्ट रूप से सामने आते है । मनुष्य चिंतनशील प्राणी है और इसलिए वह अपने ढंग से विचार कर काम करना चाहता है, किंतु सामाजिक प्राणी होने के कारण प्रत्येक मनुष्य मनमानी नहीं कर सकता । ऐसी स्थिति में एक व्यक्ति की इच्छाएँ दूसरे व्यक्ति से टकराती है और इन्हें नियमित रखने के लिए राजनीतिक शासन आवश्यकता होता है । इस रूप में राजनीतिक सिद्धांत की मूल समस्या यथासंभव विशाल पैमाने पर सामाजिक कल्याण को बढ़ाने के लिए राज्य की सत्ता तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता के बीच सामंजस्य स्थापित करना है ।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा यह कहा जा सकता है कि साहित्यकार भी समाज में रहनेवाला एक प्राणी है । और यह संभव नहीं कि वह युगीन भावधाराओं से परे रह सके । एकांकीकार ने भी राजनीतिक समस्याओं का विषय अपनी एकांकियों में अलग - अलग पद्धतियों से चित्रित किया है । अध्ययन के दौरान राजनीतिक समस्या के अंतर्गत पाए जानेवाली अनेक समस्याओं का वर्गीकरण किया जा सकता है ।

4.1 परकीय आक्रमण की समस्या –

भारत पर परकीय आक्रमण बार-बार होते रहे हैं । इसमें प्रथम हूणों ने हिंदुस्थान को लुटा था । उसके बाद शकों ने बाबर, तैमर, आदि मुस्लीम सत्ता ने तथा अंग्रेजों ने पूरे हिंदुस्थान को नेस्तनाबूत कर दिया था । चीन ने 1961 में आक्रमण किया । पाकिस्तान ने दो बार आक्रमण किया । इन सारे आक्रमणकारियों ने

भारतीय जनता पर अत्याचार किए हैं । भारत की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक स्थिति पर इन सभी का परिणाम हुआ है । एकांकीकार ने प्रस्तुत चित्रण में आक्रमण के परिणाम बता दिए हैं ।

'झाँसी की रानी ' एकांकी में परकीय आक्रमण की समस्या आ गई है । उस काल में हिंदुस्थान में छोटे-छोटे संस्थान थे । झाँसी की महाराणी परकीय सत्ता को रोकने में लगी थी । लेकिन राजे, महाराजे रक्त मंडल की छाया में ऐश-आराम में मशगूल थे । नाच गान में दिल बहला रहे थे । ब्राह्मण-भोजन में अपनी मुक्ति ढूँढ़ते थे । इसी विलासिता में बांदा के नवाब सेनापति तात्या, सरदार रावसाहेब भी थे । तब विश्वासघात से परकीय सेना हिंदुस्थान पर कब्जा करती है । तब लक्ष्मीबाई से रघूनाथ कहते हैं -''महारानी, जनरल रोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया ।'' [5] तब महारानी का खून खौल उठता है । अपनी सेना को तैयार रहने का आदेश देती है । और सारे महाराजाओं को उनके साथ रहने की बिनती करती है और कहती है - ''मैं जानती थी, वे आएंगे । तुम जल्दी आओ, अपनी सेना को देखो । रघूनाथराव से कह दो कि कूच के लिए तैयारी पूरी रहे । किसी भी क्षण जरूरत पड़ सकती है ।''[6] लेकिन ग्वालियर के सिंधिया महाराज फिरंगियों के साथ मिलते है । रानी को अपयश का मुँह देखना पड़ता है । रणक्षेत्र में वह मारी जाती है । आक्रमणकारियों को हमेशा हमारे ही लोगों ने साथ दिया हैं । हिंदुस्थान के इन परकीय आक्रमण द्वारा अनेक वीर शहीद हो गए है । प्राचीन काल से हिंदुस्थान पर पड़ोसी देश से हमेशा आक्रमण हुआ है । 1958 में दलाई लामा ने हिंदुस्थान का आश्रय लिया था । इसके चार-पाँच वर्ष बाद चीन ने हमला बोल दिया था । इन परकीय आक्रमण द्वारा देश का बहुत नुकसान हुआ है । ऐसा एकांकीकार कहते हैं ।

'प्रतिशोध' एकांकी में भारत पर आक्रमण करनेवाले विदेशियों में हूणों का प्रथम क्रमांक है । प्रारीया का नाइट, गील के सरदार, यूनान के बादशाह आदि का कत्ल अतीला ने किया है । जहाँ से भी वह गुजर गया वहाँ चारों ओर अनाचार, अत्याचार, बलात्कार का शोर गुंज उठता है । युद्ध कैंप में 20 हजार कैदी है, उन्हें जिंदा जलाने का हुक्म दिया जाता है । वह कहता है - ''आसपास शहरों में आग लगा दो । सब कीमती सामान लूट लो । सब मर्दों को मार डालो, लेकिन औरतों को मत मारना ।'' [7] यह अतीला का हुक्म है ।

युद्ध कैदियों में एक खूब सूरत औरत है इल्डिको उसके साथ अतीला शादी करता है । यह उसकी 400 वी बीबी है । इल्डिको के सामने उसके भाई और पिता के सर काट दिए जाते है । अपनी 400 वी शादी के जश्न में वह कहता है -''इस खूशी में 400 जानवर मारकर लाओ । 400 तरह के पकवान बनने दो । 400 कैदियों के सर काटकर शादी का जश्न मनाओ । 400 दासियाँ हमारे मालिक की खिदमत में रहनी चाहिए ।''[8] प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार परकीय सत्ता द्वारा हुआ नुकसान बताते हैं । इन सत्ता धारियों ने हमारी इज्जत मिट्ठी में मिला दी थी । इसलिए भविष्य में परकीय आक्रमण का विरोध करना चाहिए ।

'मैं तुम्हे क्षमा करूँगा' एकांकी में सीमा भिक्षुणी है । हूणों के कारण हुए अत्याचार का वर्णन करते हुए कहती है - ''किसी दिन मैं गांधार के महाविहार की निवासिनी थी । आज वह विश्व प्रसिद्ध विहार खंडहर बन चूका है । उसके निवासियों के रूंड मुंड हूणों की ठोकरों ने लौट रहे हैं । नारियाँ उन चपटी नाकवाले राक्षसो की वासना को शांत करने का घृणित साधन बन चूकी है ।''[9]

इसी तरह नागरिकों को जागृत तथा उत्तेजित करते हुए दूसरी जगह सीमा कहती है -''नागरिकों, हूण आर्य परंपरा के शत्रु है । वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के शत्रु है । ... उसने विहारों की नींव खोद दी है । उसने तथागत प्रतिभा को भ्रष्ट किया है । उसने गांधार और तक्षशिला के महाविहारी को नष्ट कर दिया है । उसने भिक्षुओं को तलवार के घाट उतार दिया है । और भिक्षुणियों को लूट का माल समझकर उन पर अधिकार कर लिया है ।''[10] प्राचीन काल से आक्रमणकारियों ने हिंदुस्थान की संस्कृति को नष्ट किया है । हूणों द्वारा हिंदुस्थान की जनता पर अनेक अत्याचार किए गए थे ।

'बीमार' एकांकी में अंग्रेजों ने कुनीती द्वारा भारत पर अपनी सत्ता प्रस्तापित की । परंतु अनेक देशप्रेमीओं ने इसको उखाड़ने कि कोशिश की । भारत के लाचार लोगों ने अंग्रेजों का साथ दिया । इसी में रामरतन अंग्रेजों के थानेदार है । उनके थाने पर विद्रोही ने तिरंगा लहराया, तब रामरतन ने अनेक विद्रोही को मार दिया है । उसने छोटे बालक, बूढ़े , तथा युवक सब को गोली से मार दिया । उसके बाद जन समूह पागल हो उठा । उनकी अंहिसा की पोल खुल गई । उन्होंने थाने में आग लगा दी । ईट, पत्थर, लाठी जो कुछ भी मिला उस

से सिपाहियों को पीटा । उन्होंने किसी की आँख फोड़ डाली, किसी की टाँग तोड़ डाली और अनेक हत्याएँ की । अंग्रेजो को जबरदस्त धक्का दे दिया । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं कि परकीय सत्ता को गद्दारों ने साथ दिया था । वर्तमान स्थिति भी ऐसी है । हमारे ही लोग परकीय सत्ता से मिलकर आक्रमण को साथ दे रहे हैं । इस कारण हिंदुस्थान की एकता पर आँच आ रही है ।

'देवताओं की घाटी' एकांकी में आक्रमण का विरोध कैसा किया हैं इसकी चर्चा है । स्वतंत्रता के लिए अनेक नवयुवक तथा स्त्रियों ने योगदान दिया है । सुधा और प्रभाकर परकीय आक्रमण को रोकने के लिए कश्मीर में रहते है । सुधा खूद अपनी शादी रूकवा देती है । गौरी का पति भी शादी से इंकार करता है । उसकी खबर माला देती हुई कहती है - ''वही तो कहती हूँ, उसने कहला भेजा है कि पहाड़ के उस पार से ठगों ने मेरे वतन पर हमला किया है । वह धूँ - धूँ करके डाल रहा है । उन्होंने गाँव के गाँव पैरों तले रौंद दिए है । औरतों की अस्मत लूटी है । बच्चों को कुचल डाला है । ऐसा जान पड़ता है । देवताओं की इस पवित्र घाटी को वे मौत की घाटी बना देना चाहते है ... ।'' [11]

ताज का भाई और गौरी का पति पाकिस्तान का आक्रमण लौटाने के लिए फौज में शामिल हो जाते हैं । ताज का भाई अपनी साथी फरजी को कहता है - ''जानता है तेरे वतन पर पहाड़ के उस पार से दुश्मनों ने हमला बोल दिया है । तु पैसा माँगता है । क्या दुश्मन तेरे पास पैसा छोड़ेगा । तू इन हाथों में बंदूक सँभाल ओर दुश्मनों को अपने प्यारे वतन से बाहर निकाल दे । उनके चले जाने पर ही तेरी जीत है ?''[12]

ताज का भाई देश पर आक्रमण से चिंतित हो उठता है । दुश्मन को हटाने के लिए अपने दोस्त भाई को इकटा करता है । उसकी बहन ताज कश्मीर घाटी में गाना गाते सारे वतन में आग फैला देती है । सभी मिलकर परकीय आक्रमण का विरोध करते है । एकांकीकार ने प्रस्तुत एकांकी द्वारा परकीय आक्रमण के समय हम लोगों को क्या करना चाहीए यह बताया है । उन्होंने इस चित्रण द्वारा देश प्रेम को जागृत करने का सुंदर प्रयास किया है । जब तक समाज में जागृति नहीं होगी तब तक इस समस्या का विरोध नहीं होगा ।

'दीवान हरदौल' एकांकी में बुंदेल खंड राज्य पर मुस्लिम सत्ताधीश हिदायत खाँ आक्रमण करता है । परंतु महाराज जुझारसिंह के पास विश्वासू शुर वीर दीवान हरदौल जैसे सेनापति होने के कारण वे पराजित नहीं हो जाता हैं । हिदायत खाँ हार नहीं मानता है। षढयंत्र का आधार लेकर महाराज के विश्वासू गुप्तचर विभाग प्रमुख प्रतीकराय को फोड़ देता है । प्रतीकराय सत्ता के लालच में आकर महाराज जुझारसिंह से गद्दारी करता है । वह दासी और अन्य गुप्तचर द्वारा महाराज को महारानी के विरूद्ध भड़काता है । वे यह भी साबित करता है, की सेनापति दीवान का और रानी का शारीरिक संबंध है । महाराज बिना सोच समझकर दीवान को विष देकर मार देते है । तब हिदायत खाँ अपना सैन्य लेकर बुंदेल खंड पर आक्रमण करता है । महाराज को पराजित होकर चौरागढ़ भागना पड़ता है ।

परकीय सत्ता षढयंत्र द्वारा बुंदेलखंड पर विजय पाती है । दीवान जैसे शूर सेनापति को बेवजह प्राण देने पड़ते हैं । षढयंत्र द्वारा परकीय सत्ता ने हमें नेस्तनाबूत कराने का प्रयत्न अनेक बार किया है । कभी-कभी वे सफल भी रहे है । वर्तमान परिस्थिति में भी षड्यंत्र का अधिक उपयोग हो रहा हैं । इसी कारण छोट - मोठे संघर्ष राज्यों में हो रहे हैं । इसके पीछे परकीय सत्ता का हाथ है ।

'सखी और कंगन' ऐतिहासिक एकांकी में परकीय आक्रमण की चर्चा की है । नागौर राज्य पर गुजरात का हाकिम धावा बोल देता है । नागौर महाराज मानसिंह और दो बेटियाँ पन्ना और कमला दूर्गों किले पर है । हाकिम की सेना को किले पर विजय के लिए कुछ समय है । मानसिंह व्यथित हो जाते है । दोनों बेटियों को जहर पीने के लिए आदेश देते है । तब कमला अरिकांड के राजकुमार को राखी भेजकर मदद माँगती है । राजकुमार उम्मेदसिंह समय पर आकर हाकिम की सेना पर धावा बोल लेते हैं । युद्ध के बाद उम्मेदसिंह की सेना विजय प्राप्त करती है । महाराज मानसिंह का राज्य बच जाता है ।

रजपूत में यह वीरता रही है कि नारी की पुकार सूनकर शत्रु को भी समय पर मदत करते है । यह आक्रमण न हो जाता तो, आपस का बैर न मिट जाता । भारत के इतिहास में कई उदाहरण है । जो परकीय

आक्रमण के दौरान महाराजा ने आपस का बैर मिटाकर एकत्र होकर लढ़े है । ऐसा सुंदर चित्रण उन्होनें कर दिया हैं ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि परकीय आक्रमण द्वारा देश में अनेक समस्याएँ निर्माण हुई हैं । चीन आक्रमण के बाद हिंदुस्थान में अकाल, सूखा, भुखमरी निर्माण हो गई थी । हाल ही में कारगील आक्रमण द्वारा अनेक समस्याओं का सामना देश को करना पड़ रहा है । फिर भी समस्या समय के अनुसार बढ़ती जाती है । परकीय आक्रमण से आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति पर बहुत बड़ा असर हो रहा है । लेकिन प्राचीन काल से हिंदुस्थान का मार्ग शांति का रहा है वे छोड़ न दे तो विश्व के राजनीति में हिंदुस्थान का भविष्य उज्वल होगा। आनेवाले दिनों में हिंदुस्थान के नेताओं को सोच-समझकर इस समस्या पर निर्णय लेना चाहीए । तब हम परकीय आक्रमण को रोक सकते है ।

4.3 देश विभाजन की समस्या -

अखंड हिंदुस्तान को अंग्रेजी नीति ने विखंड़ित कर दिया । राजकर्ताओं की मनचाह राजनीति, जनता की धार्मिक कठोरता इन्हीं कारणों से देश विभाजन हो गया । एक दूसरे के नजदिक रहनेवाले, एक दूसरे के दुश्मन बन गए । दोनों देश को आज तक एक संघ नहीं बनाया है । लेकिन यह समस्या यहाँ पर खत्म नहीं हुई है । बल्कि छोटे - छोटे राज्यों को इस समस्या को घेर रखा है । एकांकीकार ने यहाँ पर विभाजन के बाद की स्थिति का चित्रण किया हैं ।

'वापसी' एकांकी में देश विभाजन की समस्या आ गई है । लतीफ और उसका बेटा असगर आक्रात गाँव में रहते है । उन्ही गाँव में चौधरी परिवार भी रहता है । जब हिंदुस्तान का बँटवारा हो जाता है, तब लतीफ और उनके परिवार को हिंदुस्तान छोड़कर पाक जाना पडता है । वे अपनी संपत्ति, खेती, घर छोड़कर चले जाते है । पाकिस्तान में भी उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता है । असगर को जासूस बनाकर हिंदुस्तान भेज दिया जाता है । उसी गाँव में दुश्मन का जासूस बनकर वह आता है । तब वह चौधरी को देखकर मकसुद से कहता है - "हाँ, इसी गाँव का है । मैं बचपन में ताऊ कहकर पुकारता था । बिल्कुल भी नहीं तो बदला ।

आवाज में वही कड़क । तब मैं 16 वर्ष का था । कितना प्यार करता था यह मुझको । जाते समय इसने कहा था ''अच्छा, जाते हो तो जाओ, लेकिन याद रखना कि इस गाँव में तुम को कोई तकलीफ नहीं थी । काश, तुम यही रहते । लेकिन खैर, वक्त ही ऐसा है । रोकूँगा नहीं । लेकिन ध्यान रखना कि हम दोस्त है, दोस्त ही रहेंगे ।'' [13]

''उस दिन हम सब रोये थे, और आज कैसा अनोखी बात है । एक बिल्कुल दूसरे ही माहौल में मैं उनको देख रहा हूँ । उन्होंने कहा था हम दोस्त है । लेकिन आज तो हम दुश्मन है । सच तो यह है कि साथ रहते थे, तब भी दुश्मन माने जाते थे । अलग है तब भी दुश्मन है । दुश्मनी का माहौल जैसे सच्चाई है, बाकी सब झूठ है । दुश्मनी का माहोल ! आह ! क्या यह माहौल बदल नहीं सकता, क्या हम कभी एक दूसरे को प्यार नहीं कर सकते, क्या इन्सान ...'' [14]

विभाजन के कारण असगर जैसे अनेक लोगों को यही वेदना सहनी पड़ी है । आज भी हम अपने भाई को दुश्मन मानते है इसी कारण कश्मीर घाटी में बार-बार युद्ध की छोटी-मोटी घटनाएँ हो रही है । दुभंगित मनों को एक संघ बनाना इतना आसान नहीं है । इसकी ओर ध्यान देने की जरूरत रहै । इसके चित्रण द्वारा भारतीय मुसलमानों का दु:ख हमारे सामने रखा है । उनकी स्थिति यहाँ पर शापित लोगों की तरह है ।

'वीरपूजा' एकांकी में विभाजन के समय लोगों ने अनेक सुंदर स्त्रियों पर अत्याचार की सीमा ही तोड़ दी । इसी एकांकी का स्त्री पात्र कहता है ''मैं ऐसी बहनों को जानती हूँ, जो पंद्रह घरों में रह चूकी है । उनमें न लाज है, न शिष्टता । वे वेश्या के समान आचरण करती है । उन्हे देखकर कलेजा फटता है ।''[15] विभाजन के बाद दोनों धर्म के लोगों ने भयानक अत्याचार किए हैं । इस अत्याचार से ग्रस्त लोग आज भी वर्तमान समाज में दिखाई देते हैं । इसलिए विभाजन की समस्या समाज से नष्ट हो गई हैं । यह हमारा भ्रम है ।

'रक्तचंदन' एकांकी में भारत-पाक विभाजन के बाद का चित्रण आ गया है । पाक कश्मीर घाटी को अपनी भूमि समझता है । भारतीय सैनिक और पाक सैनिक में छोटे -मोठे संघर्ष हो रहे हैं । आज भी पाकिस्तान सैनिक द्वारा कश्मीर घाटी के लोगों के ऊपर अन्याय हो रहे हैं । विभाजन के कारण कश्मीर घाटी में सोमनाथ, राधाकृष्ण और बेटी गौरी आदि हिंदू परिवार के सदस्यों की जान खतरे में है । वहाँ पर राधाकृष्ण जैसे

लोग अपने बेटी को बचाने के लिए जहर दे रहे हैं । पाक सैनिक द्वारा कश्मीर घाटी में उन लोगों के ऊपर अत्याचार हो रहे हैं । कभी -कभी वे लोग गाँव में आकर स्त्रियों पर बलात्कार करते हैं । प्रस्तुत चित्रण विभाजन के बाद का है । इस चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं - विभाजन तो एक बार हो गया लेकिन उसके दुश्परिणाम बार - बार दोनों देशों में दिखाई दे रहा है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन के बाद कहा जाता है कि विभाजन के पूर्व जो प्रश्न थे वे विभाजन के बाद समाप्त नहीं हो गए हैं । बल्कि जटिल बन गए हैं। देश विभाजन के पीछे नेता लोगों की गलतियाँ प्रमुख कारण रही है । देश का विभाजन हो गया । जनता को लगा था कि विभाजन के बाद देश में सुख - शांति होगी, लेकिन विभाजन के बाद देश के सामने अनेक नई-नई समस्याएँ निर्माण हो रही हैं । जो भारत की सभी सामान्य जनता आज भी भोग रही है । इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण प्रभाकर जी ने अपनी सरल शैली द्वारा प्रस्तुत किया है ।

4.4 न्याय की समस्या -

वर्तमान समाज में सामान्य व्यक्ति को न्याय मिलना मुश्किल हो रहा है । गुन्हेगार गुनाह करके खुले आम घूम रहे हैं । रुपयों के जोर पर आदालत का फैसला बदल रहा है । इसी कारण गरीब लोगों को न्याय से वंचित रहना पड़ रहा है । एकांकीकार ने इस समस्या के चित्रण द्वारा वर्तमान स्थिति में न्याय की समस्या क्यों उत्पन्न हो रही है, यह बताया है ।

'मर्यादा की सीमा' एकांकी में एक दिन राजा शकुंत के आश्रम में विश्वामित्र को प्रणाम करने भूल जाते है, तब विश्वामित्र अपने आप अपमानित समझने लगते है । क्रोध में राजा शकुंत को जिंदा मारने की प्रतिज्ञा गुरू विश्वामित्र करते है । यह काम क्षत्रिय शिष्य प्रभु रामचंद्र को दिया जाता है, तब इस एकांकी में न्याय की समस्या आ जाती है । भूलना मनुष्य का स्वभाव है । इतनी छोटीसी बात के लिए इतना बड़ा दंड विश्वामित्र देते है । यह न्याय प्रविष्ट नहीं है । दूसरी बात विश्वामित्र की प्रतिज्ञा पूर्ण करने के लिए गुरू राम और शिष्य हनुमान युद्ध करते हैं । तब प्रश्न आ जाता है इस बात का न्याय कौन करे ?

विश्वामित्र को कौन समझायेंगे कि यह अन्याय आप शकुंत राजा पर कर रहे हैं । प्रभु राम और हनुमान शकुंत राजा के लिये युद्ध करते हैं । अंत में राम पराजित हो जाते हैं । अपने शिष्य के हाथों से वे पराजय स्वीकार करते हैं । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते हैं कि न्याय का प्रश्न प्राचीन काल से समाज में रहा है । विश्वामित्र जैसे गुरु द्वारा भी सामान्य शकुंत को न्याय नहीं मिला हैं । आज वर्तमान समाज में भी इसी तरह का दृश्य दिखाई देता है ।

'भोगा हुआ यथार्थ', एकांकी में पारसनाथ घर का प्रमुख है । अर्थ लोभ के कारण भाई निरंजन को पागल साबित कराकर उसकी संपत्ति हड़प लेता है । तब न्याय की समस्या आ जाती है । पारसनाथ अपने भाई के साथ जिस तरह व्यवहार करता है, उसी तरह पत्नी कुंती के साथ भी करता है । पत्नी कुंती को तीर्थ स्थान पर छोड़ आकर बीमा कंपनी से उसके बीमा के रूपये लेता है । चार साल बाद जब कुंती वापस आती है तब कुंती को कुअें में ढकेल देते है । बेटी मंजु अपनी मर्जी से शादी करना चाहती है तो उसके आम्ररस में जहर मिलाकर मार देते हैं । यही हत्या करने के बाद वह रुपयों के जोर पर पुलीस थाने में उनके विरुद्ध लिखा गया रिपोर्ट देता है । अंत में अदालत का फैसला वदलने में भी कामयाब हो जाता है । रुपयों के कारण उसे सजा नहीं मिलती है । वर्तमान समाज में इसी तरह का चित्र दिखाई दे रहा है । पारसनाथ जैसे लोग गुनाह करके खुले आम घुम रहे हैं । यह एकांकीकार बताना चाहते हैं ।

'नियति' एकांकी में महाभाग नहूष मानव है । वे अपनी वीरता के कारण स्वर्गपर विजय प्राप्त करते हैं । नहूष स्वर्ग नर्तकी को पा कर खुश नहीं हो जाते । उनका कहना है कि स्वर्ग के सभी वस्तुओं, और देवगन, सिंहासन और इंद्र की पत्नी पर भी अधिकार है । यह बात जब छेड़ी जाती है, तब न्याय की समस्या आ जाती है ।

देवगन इंद्र की पक्ष लेते हैं । नहूष इंद्र की पत्नी को अपनाना चाहते हैं । तब देवगन क्रोध में आकर शाप देते हैं । वैसे देखा जाये तो न्याय की दृष्टि से नहूष का अधिकार इंद्र के पत्नी पर भी है । लेकिन देवगन उसके साथ न्याय नहीं करते । देवगन की न्याय व्यवस्था नहुष के लिए अलग और देवगन के लिए अलग है, यह

स्पष्ट हो जाता है । इसी तरह 'धनिया' एकांकी में होरी भोला से गाय लेता है । कोई विष देकर गाय मार देता है । तब होरी के भाई पर धनिया आरोप लगाती है । गाँव का पटवारी पटेश्वरी, चार मुखिया, दरोगा न्याय करने चले आते हैं। होरी घर की इज्जत बचाने के लिए उन्हें पैसे देता है । तब पत्नी धनिया रुपये नहीं देती । वह कहती है गाय अपनी मरी है । जिसने मारी उसे पकड़े बिना, पैसा हमारे पास का क्यों । तब दरोगा धनिया को देखकर कहता है - "ऐसा मालूम होता है, इस शैतान की खाला ने ही हीरा को फसाने के लिए गाय को जहर दे दिया है ।" [16]

बिना न्याय करते वह होरी के पत्नी पर ही आरोप लगाते हैं । और पैसे लेकर चले जाते हैं । न्याय करने के लिए आई पुलीस अन्याय करके चली जाती है । वर्तमान परिस्थिति भी इसी तरह की है । आज कल पुलीस भी रुपयों के लालच में गरीब को बिना न्याय दिए उनके उपर अन्याय कर रही है । यही स्थिति समाज अधिक दिखाई देती है ।

'हरिलक्ष्मी' एकांकी में गाँव का चौधरी शिवचरण बिपिन की सारी संपत्ति लेता है । तब बिपिन की पत्नी कमल अदालत में जाती है । चौधरी रूपये देकर अदालत का फैसला बदलता है । तब चौधरी की बुढ़ी बुआ व्यंग्य से कहती है - "क्या बताऊँ बड़ी बहू । तुम तो जानती हो । जब हमारे शिवू ने बिपिन की गौशाला तोड़कर दीवार खीच दी थी, तब मंझली ने कहा था कि राज्य की अदालत खूली है । अदालत तो सब के लिए खूली है, लेकिन वहाँ क्या अन्याय हो सकता है ? बिपिन की बहू ने हाथ की चुड़िया बेचकर अदालत में नालिश की, पर उससे चुड़ियाँ ही चली गयी । होना तो कुछ नहीं था ।" [17]

शिवचरण की बुआ भी बेटे की तरह है । वह कमल और बिपिन को संपत्ति का हिस्सा नहीं देती हैं । उनकी संपत्ति अदालत द्वारा छिन लेती हैं । बिपिन की मृत्यु हो जाती है । तब विधवा कमल शिवचरण के घर में बर्तन मांझने का काम करती है । उसे अंत तक अपने न्याय के हक से वंचित रहना पड़ता है ।

'दीवान हरदौल' एकांकी में दीवान हरदौल बुंदेलखंड का शुर वीर है । जब तक नरेश जुझारसिंह के साथ है तब तक बाहर का शत्रु बुंदेलखंड पर विजय नहीं पाता है । परकीय शत्रु हिदायत खा बुंदेलखंड पर विजय

पाना चाहते है । तब वे षड़यंत्र द्वारा यह साबित करने में कामयाब होते है कि, महारानी पार्वती सेवक दीवान हरदौल के साथ रातें गुजारती हैं । महाराज, बीना सोच समझकर दीवान हरदौल को राणी द्वारा विष देते हैं । तब इसी एकांकी में न्याय की समस्या आ जाती है । महारानी इसका विरोध करती हुई कहती है - "हाँ, होता है । हरदौल जैसे धर्मात्मा और वीर पुरुष के उठ जाने से बुंदेलखंड का गौरव लुट जाएगा । ओरछा के उज्ज्वल यश पर कलंक रेखा खिंच जाएगी । महाराज सूनते नहीं हैं ।"

महारानी पार्वती आगे कहती है, "निश्चिय ही खिंच जाएगी । और ऐसी खिंचेगी कि फिर कभी मिटाये न मिटेगी । यह नहीं , अन्याय की सीमा टूट जायेगी । कुल में फुट पड़ जायेगी । आपके शत्रु देश का सर्वनाश कर देंगे । इसलिए मैं फिर प्रार्थना करती हूँ कि, आप मुझे विष खाने की आज्ञा दें और हरदौल को जीवित रहने दें ।" [18]

दीवान हरदौल रानी पार्वती को अपनी माँ समझता है । उसका दोष है कि बुंदेलखंड पर जी-जान से प्रेम करना । अंत में रानी अपने हाथों से विष देती है । दीवान हरदौल पर महाराज जुझारसिंह अन्याय करते हैं । दीवान हरदौल मर जाने के उपरांत प्रतीकराय और हिदायत खा बुंदेलखंड पर विजय प्रस्थापित करता हैं । महाराज वहाँ से चले जाते है । प्राचीन काल में भी दीवान हरदौल जैसे सामान्य लोगों को न्याय से वंचित रहना पड़ा है । वे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने में कमजोर रहे हैं । इसलिए हरदौल मृत्यु को अपनाकर अन्याय सहता नजर आता है ।

इसी तरह 'कलंक मुक्ति' एकांकी में यादवों का नेता कृष्ण है । कृष्ण को यादव कुल और कुल के बाहर पूजा जाता है । शतधन्वा यादवी सत्यभामा से प्रेम करता है । वह उसके साथ शादी करना चाहता है । जब सत्यभामा के पिता उसकी कृष्ण के साथ शादी कराने के लिए तैयार होते हैं, उस समय पिता सत्यजित की हत्या शतधन्वा करता है । तब न्याय की समस्या आ जाती है । दरसल सत्यजित अपनी बेटी किसी को भी दे सकता है । उसकी मर्जी से बेटी का विवाह कर सकता है । लेकिन शतधन्वा क्रोध में आकर सोये हुए सत्यजित

की हत्या करता है । जब श्रीकृष्ण अपने ससुर की हत्या के प्रतिशोध से शतधन्वा की हत्या करते हैं । तब भी अन्याय की परिसीमा टूट जाती है ।

कृष्ण यादव कुल के राजा हैं । हत्या के बदले हत्या यह नीति अपनाते हैं । राजा का कर्तव्य वे भूल जाते हैं । फिर भी शतधन्वा की हत्या वे कराते हैं । प्रतिशोध की आग में खुद्द अनेक हत्या करते रहते है । राजा का कर्तव्य हैं अन्याय को निवारण करके उचित दंड सेवक द्वारा देना । इसी एकांकी में हत्या द्वारा न्याय कराने का प्रयास किया है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा तत्कालीन समाज में न्याय की समस्या कैसी थी यह बताया है । साथ ही वर्तमान समाज में न्याय प्रणाली में सुधार करने के लिए वे कहते हैं ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि न्याय सभी के साथ समान होना चाहिए । लेकिन कभी - कभी आदमी भावूकता में आकर अन्याय कर रहा है । जहाँ अन्याय हो जाता है वहाँ सक्षम नागरिक के रूप में विरोध करना हमारा काम है। नहीं तो यह समस्या और भी बढ़ सकती है । लोग रूपयों द्वारा अदालत का फैसला बदल रहे हैं। गलतीयों द्वारा निष्पाप लोगों पर अन्याय हो रहा है । इसका विरोध हम बीना डर के करेंगे तब यह समस्या कम हो सकती है ।

4.5 रिश्वत की समस्या -

विषय प्रवेश -

रिश्वत लेना, रिश्वत देना आज सामान्य बन गया है । सिपाहीयों से लेकर बड़े अफसरों तक सभी रिश्वत लेते हैं और सामान्य से लेकर अमीरों तक सभी रिश्वत देते हैं । रिश्वत आज सर्वसाधारण हो रही है । जिस कार्यालय में जनता के उत्पन्न पर टॅक्स लगाया जाता है, उसी कार्यालय के बाबु खुले आम रिश्वत ले रहे हैं । हिंदुस्तान में ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ पर रिश्वत का लेन-देन न हो । एकांकीकार ने इस समस्या की चर्चा निम्न एकांकियों में की है ।

'साँप और सीढी' एकांकी में उमेश बत्रा और शैलेंद्र व्यापारी बड़े-बड़े कार्यालय में रिश्वत देकर कंपनी के लाईसन्स खरीद लेते हैं । इस एकांकी में रिश्वत मागने का एक नया तरीका सामने आ जाता है । विश्वविद्यालय में पढ़नेवाली शिप्रा को रिश्वत के रूप में शरीर देना पड़ता है । वह अपनी भाभी से कहती है, ''सभी कहतें हैं, यह भी की यदि मैं प्रथम आना चाहू तो .... तो क्या ? कहती क्यों नहीं ? तो ... तो मुझे अपने शरीर का सौदा करने ....'' [19] याने शिप्रा को एक प्रकार की रिश्वत देनी पड़ती है ।

कविता भाभी अध्यापिका की नौकरी स्कुल में करना चाहती है । संस्थापक उसके साथ रात गुजारना चाहते हैं । बीना रूपयों कविता अध्यापिका बन जाती है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा रिश्वत लेने के नये - नये प्रकार कैसे होते है ये बताया है । इसी एकांकी में अजित बाबु को इनकम टॅक्स के 220 रूपये भरना हैं । तब इसी कार्यालय का चपरासी दस रूपये रिश्वत लेकर बताता है, ''अच्छा साहब अब उनसे न मिले पर हमारे शर्मा बाबु से आवश्य मिले, वे क्लार्क हैं, सब ठीक कर देंगे, 220 के 20 रूपये रह जायेंगे बस आपको ।'' 20 याने सरकार को 220 रूपये मिलनेवाले थे । वे भी चपरासी और क्लार्क आपसे में रिश्वत के रूप में बाट लेते हैं ।

इसी तरह 'अभया' एकांकी में लकड़ी के कार्यालय में काम करनेवाला राखाल बन्दोपाध्याय क्लर्क रिश्वत लेता है । और बड़े कार्यालय में रिश्वत देता भी है । जब सरकारी कार्यालय की लकड़ीयाँ बेच देता है, तब पकड़ा जाता है । वह कार्यालय के बड़े क्लार्क को रिश्वत देने की कोशिश करता है । बड़े क्लर्क उसे दंड़ देने के बजाय छोड़ देते हैं । लेकिन आगे चलकर राकाल साब सरकारी जंगल को आधे हिस्से में बेचकर मुनाफा कमाते हैं । वर्तमान समाज में भी इसी तरह का चित्र अधिक दिखाई देता है । जो रिश्वत के लिए सरकारी कुर्सी उपयोग करते नजर आ रहे हैं ।

'कितना गहरा कितना सतही' एकांकी में प्रत्येक पात्र रिश्वत अलग- अलग रूप में लेते नजर आते हैं । नलिमा के पिता प्रोफेसर प्रथम श्रेणी देने के लिये नवयुवतियों के पास शरीर माँगते है । मधुकर के पिता रेडिओ को जाली विज्ञापन देकर रोज रिश्वत लेते हैं । इन सारे लोगों की औलाद रिश्वतखोरी के विरूद्ध आवाज उठाती है । लेकिन यह सब सफल नहीं होते है । इसी तरह 'प्रकाश और परछाई' एकांकी में सुधा हरिश नामक

युवक से प्रेम करती है । हरिश अपनी पहली जिंदगी के बारे में बता देता है, कि वह दो बार जेल जा चूका है । सुधा तब के चाचा हरिश को अपने घर से निकाल देता है । जब सुधा के चाचा ब्लॅक मार्केट करते रंगे हाथ पकड़े जाते हैं । तब पुलिस को पाँच हजार रूपयों की रिश्वत देकर हवालात से छुट जाते हैं । अमीर लोग रिश्वत देकर सहीसलामत छुट सकते है, लेकिन हरिश जैसे गरीब को दो साल जेल रहना पड़ता है । प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार यह कहना चाहते है कि उच्च वर्गीयों को रिश्वत वरदान है । कभी - कभी अवैध धंदा करते समय पकड़े जाने पर रिश्वत ही काम आती है ।

'भोगा हुआ यथार्थ' एकांकी में पारसनाथ रिश्वत देकर ही अपने काले कृत्य को छुपा देते है । वह कुंती को कुअे में ढकेल देता है । पुलिस को पारसनाथ पाँच हजार रूपये देकर झुठा रिपोर्ट बनवा लेती है । पुलिस पाँच हजार रूपयों की रिश्वत लेकर रिपोर्ट तैयार करती है, कि कुंती कुअे से पानी खिचते पॉव फिसलकर गिर पड़ी है। जो पुलिस न्याय करने के लिए नियुक्त किये गये हे वे रिश्वत लेकर गुनाहों को छिपाते नजर आ रहे है । इसलिए एकांकीकार कहना चाहते है कि यह समस्या समाज के प्रत्येक घटक में नजर आ रही है ।

'धनिया' एकांकी में होरी गाँव के भोला नामक किसान से दूसरी शादी में मदद के लिए रिश्वत के रूप में गाय ले लेता है । इस एकांकी में होरी की गाय मरने के बाद धनिया गाय मारने का आरोप होरी के भाई पर लगाती है । तब मामला मिटाने के लिए रिश्वत देता है । दरोगा गाँव के पटेश्वरी को कहता है - "मेरी खुशामद फिर करना । इस वक्त तो मुझे पचास रूपये दिलवाइये नकद । पंद्रह मिनट का समय देता हूँ । अगर इतनी देर में न आये, तुम चारों के घर की तलाशी होगी । गंडा सिंह को जानते हो ? उसका मारा पानी भी नहीं माँगता । डाके में सारे गाँव को काले पानी भिजवा सकता हूँ ।" [21] वह दरोगा को पैसे देने में समय लगता है तो वह सारे गाँव को काले पानी भेजना चाहता है । उपर से यह कानुनी रपट रद्द करने के लिए दरोगा पच्चास रूपये लेता है । जनता की रखवाली करनेवाले अफसर, लोगों को इस तरह डरा-धमका कर लुट रहे है ।

'श्वेत अंधकार' एकांकी में प्रकाश सरकारी नौकरी करता है । उसकी शादी सेठ की बेटी विमला से होनेवाली है । पत्नी के लिए वह हैंगिग अलमारी, ड्रेसिंग टेबल बनाकर उसका बील सरकारी फाईल

को जोड़ता है । बील में अलग-अलग तारीख डालता है । बील के लिए दो सो रूपये धीरेन को रिश्वत के रूप में देता है । रिश्वत लेने का अलग तरीका प्रकाश अपनाता है । धीरेन विमला के भावी पति को यह कारनामा बताते हुए कहता है, "बिल्कुल स्पष्ट बताऊँगा । कुछ नहीं छिपाऊँगा । (प्रकट) महाराज । बात यह है कि तुम्हारे भावी पति ने तुम्हारे लिए हैंगिग अलमारी और ड्रेसिंग टेबल बनवाया है पर उनका मूल्य उसे नहीं, सरकार को देना है ।" [22] वर्तमान समाज सरकारी अफसर इसी तरह अपनी कुर्सी का गैर उपयोग कर रहे है । भौतिक साधनों के लालच में अलग पद्धति द्वारा रूपये कमा रहा है । इसलिए समाज से नैतिकता का पतन हो रहा है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है, कि रिश्वत लेन देन से समाज के प्रतिभाशाली व्यक्ति पर बुरा असर पड़ रहा है । मानव नैतिक मूल्य को छोड़कर भौतिक साधनों की ओर आकर्षित है । उस साधनों को प्राप्त करने के लिए वह रिश्वत ले रहा है । आजकल रिश्वत की नई-नई पद्धतियाँ प्रचलित हो रही है । जिसके कारण मनुष्य की कीमत कम हो रही है । इस समस्या को कम करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को आत्म चिंतन की जरूरत है । बचपन से ही ऐसी शिक्षा का प्रबंध होना चाहिए तब अच्छे बुरे को वह जान सकता है ।

4.6 सत्ता का दूरूपयोग -

गलत लोगों के हाथ में सत्ता हो तो उसका परिणाम समाज के सामान्य जनता पर ही अधिक होता है । जिस स्थान पर सही आदमी होना चाहिए । उस स्थान पर गलत आदमी की नियुक्ति हो जाये तब सत्ता का दूरूपयोग अधिक होने लगता है । सामान्य आदमी उनके हाथों से बच भी नहीं सकते हैं । ऐसे लोग अपनी गलतीयाँ सुधारे बीना अधिक गलतीयाँ करते रहते हैं । जिसकी कीमत समाज को देनी पड़ती है । एकांकीकार ने इसकी चर्चा निम्न एकांकियों में कि हैं।

'साँप और सीढ़ी' एकांकी में विश्वविद्यालय में विभागप्रमुख का काम करनेवाले प्राध्यापक अपनी सत्ता का दुरूपयोग करते नजर आते हैं । शिप्रा जैसे सुंदर, होशियार छात्रा के पास शरीर की माँग करते हैं । शिप्रा प्रथम श्रेणी में पास होनेवाली लड़की है, फिर भी प्रथम श्रेणी देने के लिए माँग करते हैं । एकांकीकार ने इस

समस्या के चित्रण द्वारा नये अध्यापक को सही मार्ग अपनाने के लिए मार्गदर्शन कर लिए है । ताकि वे मार्ग न बदले; आजकल सत्ता का दुरूपयोग करनेवालो में अनेक प्रमुख व्यक्ति सामने आते हैं । जिसमें गांव के प्रमुख, परिवार कर्ता या राजनैतिक नेता आदि हैं।

इसी तरह 'कुम्हार की बेटी' इस एकांकी में गाँव का प्रमुख अधिकारी आचारी नीची जाति के लोगोंपर अत्याचार करता है । महाराज कृष्णदेवराय जो राज्य के प्रमुख हैं । उनसे जाकर कहता है कि कुम्हार की बेटी को रामायण लिखने का कोई अधिकार नहीं, उसे दण्ड देना चाहिए। तब महाराज कहते हैं - "चुप रहो, आचारी । तुम समझते हो कि तुमने मुझे जो कुछ समझाया वह मैंने मान लिया या मैंने तुम्हें यहाँ का अधिकारी इसलिए नहीं बनाया था कि तुम गरीबों और नारियों पर अत्याचार करो ।"[23] कभी-कभी उच्च अधिकारीयों के ध्यान में यह बात आ जाती है, कि नियुक्त किया गया अधिकारी क्या काम करता है । अयोग्य काम पर उसे खरी - खोटी सुननी पड़ती है । लेकिन वर्तमान समाज में इस तरह के उदाहरण कम मिलते हैं । बॉस अपने अधिकारी को कहे बीना सहयोग देते हैं । इसी तरह का चित्रण समाज में अधिकतर दिखाई देता है । इसलिए एकांकीकार यह कहना चाहते हैं कि इस समस्या ने समाज उन्नति में बाधा डाली है ।

इसी एकांकी में गाँव का अधिकारी आचारी और मंदिर का प्रमुख अधिकारी अवधानी, दोने मिलकर नीचली जाति के लोगों पर अत्याचार करते हैं । गाँव के कुम्हार केसना का घर, खेती, जायदाद अपने नाम कर लेते हैं । कुम्हार उनके खिलाप कुछ नहीं कर सकता हैं । अंतः में महाराज कृष्णदेवराय के ध्यान में यह बात आ जाने के बाद उनके अधिकार समाप्त कर दिये जाते हैं । आचारी और अवधानी जैसे अनेक लोग समाज में अयोम्य पद पर रहकर अन्याय कर रहे हैं । उनके अत्याचार से सामान्य जनता को दुःख सहना पड़ रहा है । एकांकीकार ने इस समस्या का चित्रण थोड़े ही एकांकियों में किया है लेकिन प्रभावी लगता है ।

'हरिलक्ष्मी' एकांकी में गाँव का प्रमुख चौधरी शिवचरण है । गाँव पर उनकी सत्ता है । गाँववालों को कर्जा देता है । वह साढ़े पंद्रह आने का हिस्सेदार है । गरीब बिपिन की गौशाला तोड़कर दीवार खींच देता है । गाँववालों को मार पीट करता है । अपनी पत्नी हरिलक्ष्मी से कहता है, "इस गाँव में एक जज

समझो, मजिस्ट्रेट समझो, दरोगा या पुलिस समझो, सब कुछ यही बंदा है । मारने की लकड़ी, जलाने की लकड़ी, सब मेरी मुट्ठी में है । तुम कहो तो कल ही आकर अगर बिपिन की बहू तुम्हारे पैर न दबाए, तो मैं लाटू चौधरी की पैदायश नहीं ।'' [24]

शिवचरण घमंडी है । पैसे की जोर पर कुछ भी कर सकता है । गाववालों की जमीन पर कब्जा करता है । उसके विरूद्ध बोलनेवाले व्यक्ति को मार देता है । कोई भी व्यक्ति उसके विरूद्ध आवाज नहीं निकाल सकता है । उसकी बाप-दादा से मिले चौधरी पद का उपयोग संपत्ति प्राप्त करने के लिए कर देता है ।

'दीवान हरदौल' एकांकी में बुंदेलखंण्ड के महाराज जुझारसिंह अपनी सत्ता का दुरूपयोग करते है । विश्वासू सेवक दीवान हरदौल को मौत की सजा देते है । वे अपनी पत्नी महारानी पर भी पति होने का अधिकार जचता है । दीवान हरदौल के भोजन में विष मिलाने के लिए विवश कर देते है । महाराज महाराणी से कहते है - ''मुझे नाश और निर्माण की कोई चिंता नहीं । मैं अपनी आज्ञा का पालन चाहता हूँ ।'' [25] प्रस्तुत एकांकी में सरकारी अफसर गाँव का प्रमुख मनमानी करते नजर आते है । उस काल में राजा महाराजा भी सत्ता का दुरूपयोग अधिक करते थे । वे विचारपूर्वक कदम नहीं उठाते थे । सिर्फ महाराज होने के नाते अधिकार का उपयोग करते थे ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि सत्ता योग्य व्यक्ति के हाथ में होनी चाहिए । तभी सामाजिक सुधार हो सकता है । नहीं तो समाज में अनाचार ही अधिक बढ़ता रहेगा । सुव्यवस्थापन के लिए योग्य होशियार व्यक्ति को ही चुनना योग्य है । कभी - कभी ऐसा भी देखा है कि योग्य व्यक्ति भी किसी के दबाव में आकर सत्ता दुरूपयोग कर रहा है । तब समाज में यह समस्या गंभीर बनती है।

4.7 सिफारिश की समस्या -

स्वतंत्र भारत में नौकरी के लिए या किसी भी सरकारी या गैर-सरकारी काम के लिए रिश्वत देनी ही पड़ती है । अगर आप रिश्वत देना नहीं चाहते, तो कम से कम किसी बड़े नेता की सिफारिश होना आवश्यक है । बिना सिफारिश आज के जमाने में नौकरी मिलना मुश्किल बन गया है । पात्रतापूर्ण व्यक्ति सिफारिश के अभाव में घर बैठे हैं । आज समाज में सिफारिश का महत्त्व इसी कारण बढ़ रहा है । सिफारिश का पत्र पाने के लिए लोग हजारों रूपये रिश्वत दे रहे हैं । वर्तमान समाज में बढ़ती बेकारी के साथ यह समस्या भी बढ़ रही है ।

'टूटते परिवेश' एकांकी में विवेक पढ़ा लिखा नवयुवक है । वह हर दिन नौकरी के लिए अर्जियाँ लिखता है । अंत में उसके ध्यान में आ जाता है, कि नौकरी के लिए सिर्फ पात्रता नहीं देखी जाती । उसके साथ रिश्वत या सिफारिश होना जरूरी है । उसी समय उसके भाई को बड़ा पद मिल जाता है । तब दीपक अपने चाचा से कहता है, "मैने अभी - अभी 101 वी अर्जी लिखकर तैयार की है । उसे आप अपनी सिफारिश के साथ दीपक भैया को दे दीजिए । आप तो जानते ही है, बिना सिफारिश के आजकल कुछ होता ही नहीं , इस बार मुझे नौकरी मिल जानी चाहिए ।" [26]

आज दीपक जैसे अनेक शिक्षित युवक नौकरी की तलाश में अर्जी लिखकर नौकरी की प्रतिक्षा कर रहे हैं । भारतीय समाज में यह समस्या अधिक दिखाई दे रही है कि व्यक्ति की पात्रता कभी-कभी देखी जाती है । लेकिन पहले उसके लिए किसने सिफारिश की है इस बात को अधिक महत्त्व मिल रहा है । इसी कारण नेता लोगों की कीमत भी बढ़ रही है । कभी-कभी नेता लोगों की सिफारस पत्र मिलने के लिए उनके गैर काम करना पड़ रहा है, रूपये भी देने पड़ रहे हैं । इसलिए यह बात अधिक गंभीर है ।

'श्वेत अंधकार' एकांकी में बनवारी धीरेन के कार्यालय में काम करनेवाला चपरासी है । वह चार महिने से खाली है । धीरेन ने उसे काम से निकाला है । उसका बच्चा दसवी में पढ़ रहा है । उसके लिए बनवारी परेशान है । बार-बार धीरेन बाबु के घर नौकरी मागने जाता है । प्रकाश बाबू के कार्यालय में काम

मिलने के लिए धीरेन बाबू से हाथ जोड़कर बिनती करते, कहता है, ''कोई नहीं सूनता । चार महीने से खाली हूँ । कब तक खाऊँगा । सरकार, आप ही सिफारिश कर दें ।'' [27]

लेकिन धीरेन बाबू उसकी दूसरी जगह नौकरी के लिए सिफारिश नहीं करते है । वे कहते है मैं कुछ नहीं कर सकता । तुम्ही जाओ, कर सकूँ तब भी नहीं करूँगा । बनवारी को बिना सिफारिश की नौकरी नहीं मिलती है । इसी कारण बच्चा रूपयों के लिए सायकल चुरा लेता है । दसवी कक्षा से पढ़ाई छोड़ देता है । बनवारी दूसरे सेठजी के पास नौकरी माँगता है । तब दो रूपये देकर उसे भगा दिया जाता है । एकांकीकार ने भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कर दिया है । जो आज वर्तमान स्थिति में सभी ठिकाणों पर नजर आ रहा है । एकांकीकार ने इस समस्या की चर्चा अधिक एकांकियों में नहीं कि है, लेकिन जहाँ पर चर्चा है वह प्रभावी है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि आज बीना सिफारिश की नौकरी मिलना मुश्किल है । आप की पात्रता न हो लेकिन सिफारिश बड़ी मजबूत लोगों की होनी चाहिए । तब आप को नौकरी मिल सकती है, नहीं तो आप का जीना बेकार है । सिफारिश द्वारा अपात्र व्यक्ति को उच्च पद प्राप्त हो जाने से समाज के विकास में बाधा पैदा हो रही है । इसलिए इस समस्या का धोखा देखकर इस पर उपाय निकालना बहुत जरूरी है ।

4.8 संपत्ति हड़प करने की समस्या -

स्वार्थ और लालच के कारण मानवीय मन बदल रहे हैं । भाई-भाई का गला काट रहा है । संपत्ति हड़प करने की प्रवृत्ति मनुष्य में बढ़ रही है । बिना प्रयत्न से अमीर बनने के ख्वाब से आदमी नैतिकता भूल रहा है । वर्तमान समाज में छलकर संपत्ति हड़प करने की प्रवृत्ति छुपी रहती है । समय आने पर वह अपना काम करती है । एकांकीकार ने अपनी निम्नलिखित एकांकियों में इस समस्या की चर्चा की है ।

'भोगा हुआ यथार्थ' एकांकी में पारसनाथ अपने भाई के साथ विश्वासघात करता है । निरंजन नाम का उनका बड़ा भाई है । दोनों भाई में संपत्ति का बँटवारा हो चूका है । फिर भी पारसनाथ संपत्ति के लालच में बड़े भाई को पागल साबित करके अदालत द्वारा संपत्ति हड़प करता है । निरंजन को शादी करने नहीं देता है । अंत में निरंजन को पागलों के अस्पताल में भेज दिया जाता है । जब वह अस्पताल से वापस घर आता है तब उनके दवा में जहर मिला देता है । और उसे मारकर सारी संपत्ति का मालिक बनता है ।

'तीसरा आदमी' एकांकी में समर और सुचेता पति-पत्नी है । उनकी 'चित्रा ट्रेडर्स' नामक कंपनी है । कंपनी का कारोबार बहुत बड़ा है । समर का भाई बिपिन कंपनी का मालिक बनना चाहता है । उसके लिए वह भाई समर के मन में संदेह निर्माण करके उसे मानसिक रोगी बनाता है । जब भी वह समर से मिलता है, तब सुचेता भाभी और उनके विवाह पूर्व प्रेमी डाक्टर विवेक के बारे में बताता रहता है । समर दिन-ब - दिन मानसिक रोगी बनता है । अपनी योजना को सफल होते हुए देखकर बंदूकवाला से बिपिन कहता है - ''सच । तब तो अपनी जीत निश्चित है ? भैया का दीमाग ठीक नहीं होगा, और 'चित्रा ट्रेडर्स' का मालिक मैं बन जाऊँगा, बेशक आप बड़े पार्टनर होंगे । अच्छा मैं भाभी को बुलाता हूँ ।'' [28]

प्रभाकरजी ने वर्तमान स्थिति में लोगों के बदलते हुए रिश्ते के साथ, लालची स्वभाव को भी प्रकाश में लाया है । वे यह कहना चाहते है मानवीय स्वभाव इतना स्वार्थी बन गया है की उसके सामने रिश्ते नाते सब बेकार हो गये है । उसे संपत्ति ही प्रिय लग रही है । आधुनिक समाज में यह समस्या अधिक दिखाई देती है । मानवीय स्वार्थी स्वभाव का दर्शन इस एकांकी द्वारा हो जाता है ।

इसी तरह 'मैं भी मानव हूँ' एकांकी में सम्राट अशोक को पूरा विश्व जानता है, लेकिन वह सम्राट किस तरह बने यह भी जानना जरूरी है । विश्व पर अधिकार पाने की लालच में वे अपने भाई के साथ विश्वासघात करके संपत्ति का वारिस बन गए है । उनकी बहन संघमित्रा गौप्य का विस्फोट करते हुए कहती हैं - ''जानती तो नहीं पर कल्पना कर सकती हूँ । बचपन से आपको पहचानती हूँ । राजगद्दी भी तो बड़े भैया सुसीम के सिर का

सौदा करके ली थी । औरों के भाँति विरासत में नहीं पायी । विरासत एक प्रकार का दान हैं, और दान लेना वीरता का अपमान हैं ।'' [29]

एकांकीकार ने आदमी के अंतर्मन में छुपी हूई भावना, दोष को संघमित्रा के द्वारा लोगों के सामने लाया है । सम्राट अशोक को आदर दृष्टि से देखनेवाले लोगों को यह भी मालूम नहीं की सम्राट को राजगद्दी कैसी मिली है ? लालच और स्वार्थ से अशोक जैसा महायोद्धा भी नहीं छूटा है । आत्मस्वार्थ मनुष्य को कहाँ से कहाँ पहुँचाता है । यह यहाँ दिखाया है । लेकिन लोगों को फँसाकर लिये संपत्ति का उपभोग वह अधिक दिन नहीं ले सकते । उसकी उपचेतना उसे शांति से सोने नहीं देती है ।

'दूर और पास' एकांकी में राम प्रसाद एजंट है । जगन्नाथ जैसे भोले आदमी को वह फँसाता है । जगन्नाथ गरीब दुकानदार है । धंदे में नुकसान हो जाने के कारण दुकान बंद करना चाहता हैं । तब रामप्रसाद उन्हे सावकार के पास से कर्जा देता है । दुकान के कागज गिरवी रखकर पाँच हजार रूपये दिये जाते है । लेकिन हिसाब में छः हजार रूपये लिखा जाता है । कर्जा वापस देने का समय आ जाता है । तब रामप्रसाद जगन्नाथ की दुकान खुद पंधरह हजार में लेने की कोशिश करता है ।

जब यह बात जगन्नाथ के भाई के ध्यान में आ जाती है तब वे पैसों की मदद करके दुकान वह बचा लेता है । अगर भाई की मदद समय पर न मिलती तो जगन्नाथ का मित्र दुकान लेने में कामयाब हो जाता । मित्र बनकर राम प्रसाद मदद करता है, लेकिन असल में वह जगन्नाथ को फँसाना चाहता है । दुकान पर कब्जा करना चाहता है । इसी तरह वर्तमान समाज में मित्र भी स्वार्थ के कारण एक - दूसरे की संपत्ति हड़प कर रहे हैं ।

प्रभाकरजी ने मनुष्य के अंतर्मन में छुपी हूई गुन्हेगारी प्रवृत्ति को इस एकांकी द्वारा सामने लाया है । जो देवता बनकर दूसरों की मदद करनेवाले समय आने पर अपना स्वार्थ सामने लाकर, संपत्ति हड़प कैसे कर लेते है इसका सुंदर चित्रण किया है ।

'जज का फैसला' एकांकी में पढ़े - लिखे इंजिनिअर साहब बीमा कंपनी को फँसाकर रूपए लेते है । वे खुद इस बात को स्वीकार करते है । वे प्रोफेसर और जज के सामने अपना रहस्य खोल देते है । कहते है कि वे रेल की सफर कर रहे थे, तब अचानक रेल की दुर्घटना हो गई थी । इस दुर्घटना में सौ लोग मारे गए थे । भगवान की कृपा से वे बच गए थे । लेकिन बीमा कंपनी को अपने मित्र द्वारा झुठा मृत्यु पत्र जोड़कर रूपया उठा लेते है । वे खुद जजसाहब से आगे कहते है -''वह यह कि मैने बीमा कंपनी से रूपए वसूल किए थे ।'' [30]

इंजिनियअर रूपयों के लालच में सरकारी संपत्ति हड़प लेता है । लेकिन अंत में रिटायर्ड जज के सामने अपना रहस्य बताकर खुद को निर्दोष साबित करने का व्यर्थ प्रयास करता है । जजसाहब को इस बात से आश्चर्य हो जाता है । एकांकीकार ने इस चित्रण द्वारा यह साबित करने का प्रयास किया हे कि आदमी कितना भी पढ़ा-लिखा हो तो भी वह स्वार्थ लालच को टाल नहीं सकता है । कभी-कभी ऐसा काम करता है जिसको कोई सोच भी नहीं सकता । इसी तरह 'धनिया' एकांकी में धनिया का पति होरी, भोला गाँव के मित्र को मीठे-मीठे बातो में फँसाकर, उसकी गाय लेता है । भोला की शादी के लिए वह दूसरी पत्नी देने का वादा करता है । अस्सी रूपए की गाय, भूसे में फँसाकर ले लेता है । तब वह अपनी पत्नी को खुसी से कहता है -''मैंने ऐसी चाल सोची है कि गाय सूत समेत में हाथ आ जाए । कही भोला की सगाई ठीक करनी है, बस ।'' [31]

याने उसे शादी का स्वप्न दिखाकर होरी गाय ले लेता है । लेकिन बाद में पश्चाताप हो जाता है । इसी एकांकी में पटेश्वरी, दरोगा भी दूसरों की संपत्ति हड़प लेते है । किसी का कुछ हो जाए तो पटेश्वरी कहता है । ऐसा ही कोई अवसर आ जाए तो आपकी बदौलत हम भी कुछ पा लेते है । न्याय किए बिना रूपया लेते है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता हे, संपत्ति बढ़ाने के लालच व्यक्ति में बचपन से रहती है । समय आने पर स्वार्थ के कारण व्यक्ति अपना रूप बदल लेता है । पढ़े-लिखे आदमी में भी यह प्रवृत्ति नहीं होगी यह कहना मुश्किल है । मनुष्य में बिना कष्ट से संपत्ति मिलने की भावना अधिक बढ़ रही है ।

एकांकीकार इसके चित्रण द्वारा कहना चाहते है कि मनुष्य को स्वार्थी भावना पर काबू पाना चाहिए तब यह समस्या कम हो सकती है । आज यह समस्या अधिक रूप से समाज में दिखाई दे रही है ।

4.9 दल बदलु नेता -

आजकल निष्ठा, प्रेम, शब्द सिर्फ भाषण देने के लिए रहे है । स्वार्थ के कारण संघटन में रहना आदमी के लिए मुश्किल हो रहा है । सत्ता जहाँ मिलेगी, रूपया कमाने की संधी मिले वहाँ आदमी भाग रहा है । कल संघटीत पार्टी में रहनेवाले, दूसरे दिन विरूद्ध पार्टी में जा कर मिल रहे है । इस कारण भारतीय राज्य व्यवस्था में बार-बार सत्ता परिवर्तन हो रहा है । इस समस्या का रूप वर्तमान परस्थिति में अधिक देखने को मिल रहा है । इसका चित्रण उनकी एकांकियों में मिलता है ।

'साम्यवादी बनो' एकांकी में गांधीजी के सत्ता युग में नेता लोगों को भ्रष्टाचार, कालाबाजार, रिश्वत लेना मुश्किल हो रहा था । तब नेताओं ने साम्यवाद को लाने के लिए गांधी दल का साथ छोड़ना शुरू किया । साम्यवादी को लाने के लिए लोगों ने हरताल करना शुरू किया । नेताओं ने खादी छोड़कर जाकेट पहनना शुरू किया । अंत में उन्होंने गांधीजी के सत्ता में परिवर्तन कराया ।

इसी तरह 'काँग्रेसमन बनो' एकांकी में जब नेताओं को साम्यवादी बनने पर सत्ता, मंत्रीपद नहीं मिला तब नेताओ ने दल बदलना शुरू किया । धन दौलत कमाने के लिए नेता लोग काँग्रेस दल में शामिल होने लगे । इस घटना का मार्मिक व्यंग्य करते हुए एक कपड़ा विक्रेता कहता है, ''कांग्रेस मैन बनो, धन और दौलत, यश और कीर्ति, मंत्रित्व और सदस्यता, सभी कुछ प्राप्त करने के लिए कांग्रेस मैन बनो । राजदूत बनना हो, नेता बनना हो, सत्यवादी बनना हो, तो सबसे पहले कांग्रेस मैन बनो । गांधी टोपी, पटेल कुरता, जवाहर जाकेट और राजेंद्र धोती पहनो और कांग्रेस मैन बनों ।'' [32]

नेताओं ने स्वार्थ के कारण दल बदल दिया । उनके स्वार्थ का दर्शन लोगों को कराने के लिए विक्रेता मार्मिक व्यंग करता है । भारतीय राजनीतिक परिस्थिति इस तरह बदलती रही है । एकांकीकार ने इसका यथार्थ चित्रण किया है ।

'टूटते परिवेश' एकांकी में दीपक नेता है । जब वह विरोधी दल में था तब तक मंत्री बनने की कोई गुंजाईश नहीं थी । अपने स्वार्थ के लिए सिद्धांतों को तिलांजलि देते हुए वह अपने दल का विश्वासघात करके मुख्यमंत्री के दल का साथ देने को तैयार होता है । इसकी चर्चा करते हुए दीप्ति कहती है, ''पप्पा जब से दीपक भैया ने अपना दल छोड़कर मुख्यमंत्री के दल का साथ दिया है, तब से उनके मंत्री बनने की बड़ी चर्चा है, शायद आज रात को ही घोषणा हो जाये ।'' [33] प्रस्तुत चित्रण द्वारा एकांकीकार कहना चाहते है कि आदमी अपने स्वार्थ के कारण दल बदल रहा है । यह समाज के लिए घातक है । आज कल लोग ऐसी रणनीति का उपयोग कर रहे है । जहाँ उसे सत्ता मिले । इस प्रवृत्ति के कारण राजनीति में लोगों ने एक दूसरे पर विश्वास रखना छोड़ दिया है । वर्तमान स्थिति में राज्यों में एक ही स्थिर सरकार अपना कालखंड पूरा नहीं कर रही है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज में स्वातंत्र के बाद स्वार्थी नेताओं के कारण दल बदलने की ज्यादा प्रवृत्ति बढ़ गयी है । सत्ता के लालच में लोग अपना मूल्य भूल गये है । ऐसे भ्रष्ट नेता समाज को आदर्श मार्ग से हटाकर गैरमार्ग पर ले जाकर समाज पतन कर रहे है । इन नेताओं के कारण आनेवाली नई पीढ़ी में यह प्रवृत्ति बढ़ रही है, इसलिए संविधान द्वारा इस पर पाबंधी लगा कर ऐसे लोगों को बहिष्कृत करना चाहिए है ।

4.10 शरणार्थियों के पूनर्वसन की समस्या -

भारत के इतिहास में बँटवारे की घटनाएँ अमर हो गयी है । उखडे हुए लोग उनका संसार देखकर पंडित जवाहरलाल नेहरू कहते है, ''मैं बंदुक की गोलियों का सामना करने से नहीं घबराता, पर शरणार्थियों की तकलीफ मुझसे नहीं बर्दाश्त होती।'' पंडित जी के विधान से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह समस्या कितनी भयानक थी । और वर्तमान परिस्थिति में इसका कितना महत्व बढ़ा है यह एकांकीकार ने स्पष्ट किया है ।

'पंखुडी और फौलाद' एकांकी में शरणार्थियों के पूनर्वसन की समस्या आ गई है । हरिद्वार शहर में सारे शरणार्थी बहुत बड़ी संख्या में इकट्ठा हो जाते है । गांधीजी और नेहरू उनकी समस्या सूनने के लिए जब उनसे मिलने जाते है तब शरणार्थिओं को मिली असुविधाओं के कारण नेताओं का स्वागत 'भारतमाता मुर्दाबाद' नारा से कर देते है । ईट और पत्थर से भीड़ उनका स्वागत कर देती हैं ।

उपर्युक्त एकांकी द्वारा यह कहाँ जाता है कि यह समस्या 1947 के बाद अधिक दिखाई देती थी, फिर भी आज यह कम हो गई हे कहना मुश्किल है, क्योंकि बंगाल वासियों का प्रश्न सरकार के सामने आ गया था । हाल ही में कश्मीर घाटी में लोगों पर किए गई अत्याचार द्वारा यह समस्या फिर से उभर आ गयी है । राज्यों में धर्मकांड के कारण लोग राज्य छोड़कर दूसरे राज्य में चले जा रहे है । इसलिए यह प्रश्न गंभीर बनता जा रहा है । इस पर सरकार घटना का पूनर्निरिक्षण द्वारा निर्णय ले प्रश्न मिट सकता है ।

4.11 स्वाधीन भारत में लोकतंत्र की समस्या -

स्वाधीन भारत में राजनेताओं को आजकल देश संभालना मुश्किल हो रहा है । इसी कारण लोककल्याण कार्यक्रम को तिलांजलि मिल रही है । इसका कारण यह भी एक है कि अपात्र राजनेताओं की नियुक्ति । फिर भी भारतीय समाज में अनेक धर्म जाति के लोगों की उपस्थिति भी एक कारण माना जाता है । इन सारी जनता के लिए एक कानून बनाना मुश्किल हो रहा है । राजनेताओं द्वारा लोककल्याण के लिए एकमुखी निर्णय लेना क्यों मुश्किल हो रहा है । इसकी चर्चा एकांकीकार ने कि है ।

'रसोई में प्रजातंत्र' एकांकी में एक ही परिवार का उदाहरण दिखाकर यह बता दिया है कि भारत में लोककल्याण और लोकतंत्र की समस्या कैसे बढ़ रही है ।

रामलाल के एक ही परिवार में अमल, सुजाता, नरेश, अतुल यह बेटे और बेटियाँ रहती है । घर में एक ही बावर्ची खाना बनाता है । लेकिन हर व्यक्ति के इच्छानुसार अलग-अलग खाना बनता रहता है । हर व्यक्ति की इच्छा पूरी करते-करते बावर्ची तंग आकर घर छोड़ने का फैसला करता है । अंत में यह उपाय निकला

जाता है कि घर में एक ही खाना बनाने के लिए पर्ची का उपयोग किया जाएगा । इस उपाय द्वारा घर में एक ही प्रकार का खाना बनाया जाने लगता है, लेकिन भोजन करना घर के लोग टाल देते है । इस उदाहरण द्वारा एकांकीकार ने भारतीय लोकतंत्र की अवस्था कैसी है यह बताने की कोशिश की है ।

इस एकांकी के पात्र भारतीय समाज के प्रतिबिंब है । इसी कारण लोकतंत्र का अभाव भारतीय समाज में दिखाई दे रहा है । हर व्यक्ति के इच्छानुसार संविधान बनना मुश्किल है और बना गया कानून का उपयोग करना भी मुश्किल है । इसलिए लोकतंत्र का प्रश्न उपस्थित हो रहा है । नेताओं को सरकार चलाने में अपयश आ रहा है ।

इसी तरह 'पाँच रेखाएँ' में घर के प्रत्येक पात्र अपनी इच्छा के अनुसार काम करते रहते लेकिन घर के प्रमुख व्यक्ति के अनुसार काम नहीं करते अंत में घर चलाना मुश्किल हो जाता है।

'सीमा-रेखा' एकांकी में समाज और सरकार में एकरूपता होनी चाहिए । सरकार जनता का प्रतिनिधित्व करती है । जब दोनों अपनी जिम्मेदारी समझेंगे तभी संतुलन आ सकेगा । इस एकांकी में सरकार, जनता, पुलिस अफसर और व्यापारी ये सब घटक एक दूसरे पर आरोप करने के प्रयत्न में है । अपनी जिम्मेदारी समझने की और संभालने का कोई प्रयत्न नहीं करता । हम जब भूल जाऐंगे कि हम अलग है, तभी एकता स्थापित होगी । शासन और जनता में जो विभाजन रेखा है, उसे मिटाने की आवश्यकता है । शरतचंद्र अन्नपूर्णा और सविता के संवादो से ज्ञात होती है ।

शरतचंद्र - "भाभी, वह देखो बराबर वाले कमरे में तीन लाशे रखी है । वह अरविंद और सुभाष है, जनता की क्षति और उधर विजय है, सरकार की ज्ञाति ।

अन्नपूर्णा - (रोकर) यह तुम कैसी बावलो की सी बाते करते हो । यह सब मेरे घर की ज्ञाति है ।

सविता - (इसी तरह पत्थरवृत) नहीं जीजी, यह घर की नहीं , सारे देश की ज्ञाति है । देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग है ।

शरतचंद्र - तुमने ठीक कहा, सविता । यह हमारे देश की ज्ञाति है । जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच भारी विभाजन रेखा नहीं होती ।" [34]

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है कि भारत में लोकतंत्र की समस्या मनुष्य के अलग - अलग स्वभाव पद्धतियों कारण बढ़ रही है । इसमें अनेक धर्म - जाति के लोगों ने सहयोग किया तो शासन अपना काम कर सकती है । नहीं तो यह समस्या बढ़ती ही रहेगी । इस पर उपाय सिर्फ जनता और सरकार का सहयोग ।

4.12 लोकनेताओं द्वारा सामान्य जनता का शोषण -

लोक नेता गाँव, राज्य, समाज, राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता रहता है । जनता की सेवा करते-करते, जनता उसे सन्मानीय उच्चपदों पर बिठाती है । लेकिन यही नेता लोग समाज और जनता को भूलकर मनमानी करने लगते है । स्वार्थ को टालना भूल जाते है, तब सामान्य जनता पर अन्याय करना शुरू करते है । एकांकीकार ने इस समस्या कि चर्चा अपने एकांकियों में कि है ।

'सुनंदा' एकांकी में कुल पूरोहित ब्राह्मण कुशारी गाँव का प्रमुख विश्वासू नेता है । गाँव का सब कारभार वह देखता है । गाँव में छोटी जाति के लोग भी है । उसी जाति का बसाक नाम का आदमी मरते-मरते अपनी जायदाद कुशारी को देता है और कहता है कि मेरे बच्चे बढ़े हो जाने के बाद उसे देना । बसाक को लगता है कि उसकी जायदाद सुरक्षित है और बच्चों को मिलेगी लेकिन दूर्भाग्य से ऐसा होता नहीं है । कुशारी लोगों के साथ विश्वासघात करता है । सारी जायदाद अपने नाम करा देता है । फिर भी गाँव के लोग कुशारी के विरूद्ध बोल नहीं सकते है ।

अंतः में बसाक का परिवार अनाथ हो जाता है । उसकी पत्नी और बच्चे भुखे रहते है । लेकिन गाँव के लोग उसके विरूद्ध आवाज उठाते नहीं है । इस चित्रण द्वारा एकांकीकार ने वर्तमान समाज का चित्र

प्रस्तुत किया है । समाज में इसी तरह के आदमी गरीब पर अत्याचार कर रहे है । लेकिन दूर्भाग्य से गरीबों का पक्ष लेनेवाला कोई नहीं है ।

इसी तरह 'साँप और सीढ़ी' एकांकी में उमेश बत्रा अपने स्वार्थ के लिए कविता और अजित को काले धंदे में लगवाते हैं । बत्रा साहब अपनी मनमानी करते हुए कविता और अजित की जिंदगी में काली करतुतों से शुरू करवाते है । वह कविता को ब्लैकमेल करते है । लेकिन बत्रा के विरूद्ध जाने से दोनों डरते है । बत्रा जैसे चाहे वैसे दोनों का उपयोग करके छोड़ देता है । बत्रा जैसे पात्र स्वार्थ के कारण लोगों का शोशन करते है ।

'शरीर का मोल' एकांकी में हेमचंद्र 'युगप्रतीक' के संपादक है । एक ज्ञानी विश्वासू और देश के प्रसिद्ध विश्वासू जबाबदार नागरिक है । उनकी समाज कार्य को दार्शनिक बनाने वाले आधारभूत नेता जैसी प्रतिभा रही है । वे विदेशी महिला के सौंदर्य के जाल में फँसकर देश का गुपित रहस्य उसके हाथ में सौप देने के लिए तैयार होते हैं ।

जब पैसा और भौतिक सुविधा के कारण देश के साथ विश्वासघात करने के लिए हेमचंद्र तैयार होते है तब उनकी बेटी इसका विरोध करती है और पुलिस को मदद करके उन्हे पकड़वा देती है । खूद के स्वार्थ में हेमचंद्र देश से गद्दारी करते है, और अपने आप ही मिट जाते है । एकांकीकार ने इस बढ़ती हुई स्वार्थ प्रवृत्ति के साथ स्वार्थी नेताओं का भी चित्रण इसी एकांकी में किया है ।

'सीमा रेखा' एकांकी में स्वार्थ की समस्या आ गई है । लक्ष्मीचंद्र के तीन पुत्र हैं । एक शरतचंद्र राज्य का मुख्य मंत्री है । दूसरा सुभाषचंद्र विरोधी पक्ष नेता है । तीसरा विजय शासन का नौकर है । वह पुलिस इन्स्पेक्टर है । जब मुख्यमंत्री शरतचंद्र के विरूद्ध जनता मोर्चा निकालती है । तब विजय जनता पर गोली चलाता है । अपने स्वार्थ के कारण सुभाषचंद्र जनता का पक्ष लेकर, अपने सगे भाई को मुख्यमंत्री पद से हटाता हैं । पिता पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाता है । जनता के सामने विजय को हाजिर करता है । जनता उसे मृत्यु की सजा देती है । तब अपने भाई से सुभाषचंद्र कहता है - ''अपना पराया मैं नहीं जानता, मै जनता का प्रतिनिधी हूँ । मैं माननीय उपमंत्री श्री शरतचंद्र को बताने आया हूँ कि उनके एक अधिकारी ने निहत्थी जनता पर गोली चलाकर

जो बर्बर काम किया है, उसकी जाँच करवानी होगी और जब तक वह जाँच पूरी नहीं होती तब तक गोली चलाने से संबंधित सब व्यक्तियों को मुआतील करना होगा ।'' [35] स्वार्थ में सुभाषचंद्र अपने घर को मिटाते है । और खूद नेता बनते है ।

इसी तरह 'माता-पिता' एकांकी में यह समस्या आ गई है । नेता लोग विद्यार्थिओं को उकसाते रहते है । जब नवयुवक अपनी माँगे पूरी करने के लिए मोर्चा, हरताल, शुरू करते है, तब नेता लोग इसका फायदा उठाकर गुंडों द्वारा शहारों में दुकानों को आग लगवाते हैं । औरतों को बेइज्जत कर देते है । नेता लोगों ने शोसन द्वारा समाज का बहुत नुकसान किया है ।

'कितना गहरा कितना सतही' एकांकी में स्वार्थी नेता की समस्या आ गई है । नवयुवक कॉलेज छात्र नेता लोगों के सूनकर युधिष्ठिर, संदीप, मधुकर, गुरूदीप, पद्मा, श्याम हरताल करते है । इसमें अनेक लोगों की हत्या होती है । तब नेता लोग ही ऊपर से इन लोगों को खरी खोटी सुनाते है । और नवयुवक मधुकर के ध्यान में नेताओं की चाल आती है । वह कहता है, ''सच हेमंत इन्होंने हमारे हितों के बारे में कभी नहीं सोचा । मैंने देख लिया है कि हमें भड़काते है ये राजनीतिज्ञ लोग । लाभ उठाते है गुंडे और मूर्ख बनते है हम ।'' [36]

जब नेताओं की राजनीति ध्यान में आती है तब समय बहुत हो चूका है । शहर में दंगा-फसाद से अनेक जाने जा चूकी है । परस्थितियाँ हाथों से बाहर जा चूकी है । ऐसे समय मधुकर और नवयुवकों को पश्चाताप ही करना पड़ता है ।

उपर्युक्त एकांकियों के अध्ययन द्वारा कहा जा सकता है कि नेता लोग सामान्य जनता पर अधिक अन्याय करते रहते है । वे दुर्बल और गरीब लोगों को आज तक लूटते आ रहे है । कभी-कभी वे जनता को दूसरों के विरूद्ध उसकार्ते है और स्वयं अलग रहकर तमाशा देखते रहते है । ऐसे स्वार्थी नेताओं से दूर रहना चाहिए । वर्तमान परिस्थिति में यह समस्या समाज के अंतरंग में अधिक है । इसका निर्मूलन जनता के हाथ में ही है ।

निष्कर्ष -

प्रभाकर जी राजनैतिक आंदोलन में सक्रीय कार्य करते रहे है । अतः राजनैतिक एकांकी लिखना उनकी रूचि अनुकूल है । प्रस्तुत एकांकी में छोटी-से-छोटी समस्याओं का चित्रण अनिवार्य हैं । एकांकियों के अध्ययन द्वारा यह कहा जा सकता है ।

1. परकीय आक्रमण द्वारा हिंदुस्थान का बहुत नुकसान हो गया है । एकांकीकार ने इन समस्याओं के चित्रण द्वारा आक्रमणकारी कुप्रवृत्ति का दर्शन कराया है । साथ इस मार्ग से अलग रहते एकसंघ होकर प्रतिकार करने का उपाय बतया है।

2. नेता लोगों ने अपने स्वार्थ के कारण देश विभाजन कर दिया है । लेकिन भविष्य में छोटे-छोटे राज्यों का भी विभाजन हो सकता है । ऐसे गंभीर घटना की ओर लक्ष कंद्रीत करने का प्रयास किया है । भविष्य में राज्य विभाजन का प्रश्न आ सकता है । इसलिए विभाजन समस्या की ओर ध्यान देना जरूरी है ।

3. शिक्षित जनता का काम है न्याय व्यवस्था का असली स्वरूप समाज तक पहुँचाना होगा। तब रूपयों के जोर पर फैसला बदलने वालों का साम्राज्य अपने आप खत्म हो जाएगा ।

4. अपने घर में हर व्यक्ति का कर्तव्य वन जाता है कि बच्चों पर अच्छे संस्कार करे आगे चलकर वे नैतिक मूल्यों का मोल पहचान ले तभी रिश्वत की समस्या कम होगी ।

5. उच्चपद पर पात्र व्यक्ति को ही नियुक्त करना चाहिए, अपात्र व्यक्ति को नियुक्त करने से वे सत्ता का दूरूपयोग ज्यादा कर देगा ।

6. सिफारिश द्वारा मिली नोकरी का मूल्य नहीं किया जा सकता है, इसलिए भ्रष्टाचार जैसे कुप्रवृत्ति बढ़ जाएगी, ऐसे व्यक्ति द्वारा समाज का अहित होगा ।

7. मनुष्य में भौतिक सुविधा के साथ स्वार्थ भावना बढ़ रही है । इसलिए संपत्ति हड़प करने की प्रवृत्ति मनुष्य में अधिक दिखाई दे रही है । इसका प्रमुख कारण है भौतिक साधनों की आसक्ति ।

8. दल बदलने की प्रवृत्ति के कारण नई पीढ़ी पर अनिष्ट परिणाम हो रहा है । व्यक्ति स्वयं का मूल्य न जानकर सत्ता के लालच में समाज को नैतिक पतन की ओर ले जा रहा है । ऐसी प्रवृत्ति को रोकने के लिए संविधान द्वारा नेताओं पर पाबंदी लगानी चाहिए और ऐसे नेताओं को समाज से बहिष्कृत करना चाहिए ।

9. शरणार्थियों की यह समस्या छोटी चिनगारी की तरह है । सरकार द्वारा अध्ययन करके हल निकलना चाहीए । क्योंकि इसकी शुरूवात कश्मीर घाटी से शुरू हो चूकी है ।

10. लोकतंत्र में सरकार और राजनेताओं को सहयोग दे तब सफलता मिलेगी । राजनेता जनता को मदद कर देंगे तब समझौते द्वारा यह समस्या का हल निकल सकता है ।

11. जब सामान्य जनता राजनेता के विरूद्ध आवाज न निकाल लेती तब तक यह समस्या बढ़ती रहेगी और वे लोगों को फँसाकर अमीर बनते रहेंगे ।

- संदर्भ -

1. शिवरानी देवी, प्रेमचंद - घर में, पृ. 94-95
2. रांगेय राघव, प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड, पृ. 56
3. मधुकर, पाक्षिक के मार्च 1945 के अंक से, पृ. 497
4. आचार्य नरेंद्रदेव, राष्ट्रीयता और समाजवाद, पृ. 556
5. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक भाग -3, झाँसी की रानी, पृ. 105
6. वही, पृ. 105
7. विष्णु प्रभाकर, प्रतिशोध (मेरे प्रिय एकांकी), पृ. 63
8. वही, पृ. 67
9. विष्णु प्रभाकर सं. नाटक भाग -3, मै तुम्हे क्षमा करूँगा, पृ. 341
10. वही, पृ. 351
11. वही, देवताओं की घाटी, पृ. 270
12. वही, पृ. 267
13. वही, वापसी, पृ. 102
14. वही, वापसी, पृ. 102
15. विष्णु प्रभाकर, वीरपुजा (क्या वह दोषी थी), पृ. 86
16. विष्णु प्रभाकर धनिया, पृ. 138
17. वही, हरिलक्ष्मी, पृ. 287
18. वह, दीवान हरदौल, पृ. 113
19. विष्णु प्रभाकर सं. ना. भाग -1, साँप और सीढ़ी, पृ. 174
20. वही, पृ. 175
21. विष्णु प्रभाकर सं. ना. भाग -3, धनिया, पृ. 139
22. विष्णु प्रभाकर सं. ना. भाग -3, श्वेत अंधकार, पृ. 405

23. वही, कुम्हार की बेटी, पृ. 57

24. वही, हरिलक्ष्मी, पृ. 287

25. वही, दीवान हरदौल, पृ. 313

26. वही, टूटते परिवेश, पृ. 30

27. वही, श्वेत अंधकार, पृ. 404

28. वही, तीसरा आदमी, पृ. 36

29. विष्णु प्रभाकर सं. ना. भाग -1, मै भी मानव हूँ, पृ. 116

30. विष्णु प्रभाकर सं. ना. भाग -3, जज का फैसला, पृ. 77

31. वही, धनिया, पृ. 123

32. विष्णु प्रभाकर सं. ना. भाग -2, कांग्रेसमैन बना, पृ. 225

33. विष्णु प्रभाकर सं. ना. भाग -1, टूटते परिवेश, पृ. 22

34. वही, सीमा रेखा, पृ. 301

35. वही, सीमा रेखा, पृ. 298

36. वही, कितना गहरा कितना सतही, पृ. 18